Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 7.384
Volume - 7, Issue - 8, August - 2024

DOIs:10.2018/SS/202408004 --:-- Research Paper / Article / Review

प्रेमचंद कृत गोदान में वर्णित समस्याओं का चित्रण एवं उनका निराकरण

अंशु शेखर
शोधार्थी, हिंदी विभाग, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना - 800020
ई. मेल- anshushekhar15@gmail.com

शोध सार: प्रेमचंद ऐसे प्रथम भारतीय उपन्यासकार हैं जिन्होंने उपन्यासों का उपयोग समाज और जीवन की आलोचना के लिए किया है। उन्होंने अपने उपन्यासों में उन समस्याओं को चित्रित किया है जो वर्तमान युग से जुड़ी हुई हैं और जिन्हें हर व्यक्ति अनुभव करता है। प्रेमचंद एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते थे जहाँ भेदभाव के अभिशाप से मानवता पीड़ित न हो, किसी प्रकार का शोषण न हो और मनुष्य की पहचान सम्पति और जाति के पैमाने से न हो। गोदान में प्रेमचंद का यही उद्देश्य प्रमुखता से व्यक्त हुआ है। इस उपन्यास का प्रधान उद्देश्य है कृषक जीवन की समस्याओं का चित्रण करना, उसके शोषण का जीवंत चित्र प्रस्तुत करना और उसकी दीन - हीन स्थिति से समाज को परिचित कराना। किसान का शोषण कौन करता है तथा उसके शोषण के लिए समाज में कौन - कौन से लोग उत्तरदायी हैं ? इन सभी का सजीव चित्रण गोदान में किया गया है। उपन्यास मनोरंजन की वस्तु नहीं है अपितु वह जीवन की सच्चाइयों व यथार्थ को उजागर कर हमें सोचने - विचारने को विवश करता है और संघर्ष की प्रेरणा प्रदान करते हुए उसके निराकरण के लिए मार्ग प्रशस्त करता है। गोदान की समस्याओं का चित्रण करते हुए उसके निराकरण का मार्ग स्पष्ट करना ही इस शोध आलेख का अभीष्ट है।

बीज शब्द: कृषक समाज, शोषणवादी मान्यताएँ, ग्रामीण जीवन यथार्थ, पूँजीवादी व्यवस्था, सेवा का आदर्श, नारी का दृढ़ संकल्पित, आत्म संयमित एवं विद्रोहात्मक स्वरूप, संगठन की उपादेयता।

1.मूल आलेख :

(1) कृषक जीवन की विसंगतियों का चित्रण - गोदान की रचना कृषक जीवन से जुड़ी हुई समस्याओं का चित्रण करने के लिए की गयी है। होरी, कृषक वर्ग का प्रतिनिधि पात्र है। उसके जीवन की 'ट्रेजेडी' हर किसान के जीवन को प्रस्तुत करती है। जब भारत में जमींदारी प्रथा थी तो किसान उसके शिकंजे में कसा हुआ था। जमींदार, कारकुन, पटवारी, सूदखोर, महाजन आदि तो उसका शोषण करते ही हैं, इनके अतिरिक्त पुलिस, व्यापारी, धर्म के ठेकेदार भी उसका शोषण करते हैं। यह कैसी विडंबना , कैसा विरोधाभास है कि जो किसान सारे विश्व के लिए अन्न उपजाता है, वही खुद भूखा है, उसकी स्थिति ऐसी हो जाती है कि किसी किसी दिन उसे अन्न का एक दाना तक मयस्सर नहीं होता। यह भी विडंबना ही है कि अपने शोषकों के बारे में होरी जैसा किसान अच्छी तरह जानता है फिर भी, रूढ़ियों और संस्कारों से बँधा हुआ होने के कारण वह उनके प्रति क्रोधाभिभूत नहीं हो पाता, इस शोषण के लिए वह अपने भाग्य को ही दोषी मानता है।

यहाँ ध्यान देने योग्य तथ्य यह है कि होरी के ऐसा मानने के बावजूद, उसका पुत्र 'गोबर' अपने पिता की इस अवधारणा से सहमत नहीं है। वह इस बात को जानता है कि "भगवान तो सबको बराबर बनाते हैं। यहाँ जिसके हाथ में

लाठी है, वह गरीबों को कुचलकर बड़ा आदमी बन जाता है।" किसानों के इस शोषण का कारण है उनके संस्कार, रूढ़िवादिता और संगठन का अभाव । वे एक-दूसरे से ईर्ष्या करते हैं और इसलिए बैलों की तरह जमींदारों के हल में जुते रहते हैं।

जमींदार को किसान से लगान वसूल करने का जायज़ हक है, किंतु वे नाजायज़ रूप में नजराना लेते हैं और किसानों से बेगार कराते हैं। रायसाहब अमरपाल सिंह वैसे तो किसानों के शुभेच्छु बनते हैं किंतु स्वार्थ नहीं छोड़ सकते, उनकी कथनी और करनी में अंतर है। यही कारण है कि मेहता इस बात को समझते हुए रायसाहब से कहते हैं- " मानता हूँ, आपका अपने असामियों के साथ बहुत अच्छा बर्ताव है, मगर प्रश्न यह है कि उसमें स्वार्थ है या नहीं। इसका एक कारण क्या यह नहीं हो सकता कि मद्धिम आँच में भोजन स्वाविष्ट पकता है ? गुड़ से मारने वाला जहर से मारने वाले की अपेक्षा कहीं अधिक सफल हो सकता है। मैं तो केवल इतना जानता हूँ, हम या तो साम्यवादी हैं या नहीं है। हैं तो उसका व्यवहार करें, नहीं हैं तो बकना छोड़ दें। मैं नकली जिन्दगी का विरोधी हूँ। अगर मांस खाना अच्छा समझते हो तो खुलकर खाओ । बुरा समझते हो, तो मत खाओ, लेकिन अच्छा समझना और छिपकर खाना, यह मेरी समझ में नहीं आता। मैं तो इसे कायरता भी कहता हूँ और धूर्तता भी, जो वास्तव में एक है।"

इस संवाद के माध्यम से प्रेमचंद हमारा ध्यान इस ओर आकर्षित करवातें हैं कि बुद्धिजीवि लोग रायसाहब जैसे रँगे सियारों की वास्तविकता से अच्छी तरह से परिचित हैं। शहर के मेहता और गाँव के गोबर जैसे लोग ही इस शोषण के विरुद्ध आवाज बुलंद कर समाज को इस अभिशाप से मुक्ति दिला सकते हैं।

(2) शोषण के विविध रूपों का चित्रण - किसान का शोषण जमींदार तो करता ही है किंतु इस शोषण चक्र में और भी कई लोग शामिल है। गाँव के महाजन और साहूकार भी किसान की मजबूरी का लाभ उठाकर ऊँची दर पर ब्याज वसूल करते हैं। साहूकार के सूद की दर एक आना रुपया से लेकर दो आना रुपया तक है जो 75 प्रतिशत वार्षिक से 150 प्रतिशत तक जा पहुँचती है किंतु किसान मजबूर है, कर्ज लेने को विवश है, कभी खाद के लिए, कभी बीज के लिए, कभी बैल के लिए तो कभी लगान चुकाने के लिए, तो कभी सामाजिक दंड की भरपाई के लिए। होरी कहता है " कितना चाहता हूँ कि किसी से एक पैसा कर्ज न लूं लेकिन, हर तरह का कष्ट उठाने पर भी गला नहीं छूटता ।"

जमींदार के कर्मचारी, कारकुन, कारिन्दा तथा सरकार के पटवारी आदि भी किसान का शोषण करते हैं। पुलिस के गण्डसिंह जैसे थानेदारों की मिलीभगत से गाँव के मुखिया भी किसान से मिली रिश्वत के पैसों में अपना हाथ बँटाते हैं। समाज और धर्म भी किसान का शोषण करने में पीछे नहीं है। झुनिया को घर में आश्रय देने पर गाँव के भाग्यविधाताओं ने 100 रुपए दंड और तीस मन अनाज जुर्माने के रूप में वसूल किया । दातादीन जैसे धर्म के ठेकेदार भी किसान का शोषण करते हैं। मृत्यु के समय पर भी होरी से गोदान की अपेक्षा करने वाले ये तथाकथित धर्म के ठेकेदार समाज के मुँह पर तमाचा मारते हुए से प्रतीत होते हैं। जो व्यक्ति जीवनपर्यन्त एक गाय का जुगाड़ अपने लिए नहीं कर सका उससे मरते समय गोदान के लिए कहना कहाँ का न्याय है पर दातादीन को इससे क्या ?

(3) पूँजीवादी व्यवस्था को समाप्त करने का संकल्प - गोदान में प्रेमचंद ने पूँजीवादी व्यवस्था को समाप्त करने का संकल्प व्यक्त किया है। खन्ना पूँजीपतियों के प्रतिनिधि मात्र हैं। शोषण की प्रक्रिया नगर और गाँव में समानान्तर रूप से चलती है। गाँव में जमींदार किसान का शोषण करता है तो नगर में मिल मालिक और पूँजीपति मजदूर का शोषण करके अपनी सोने की लंका खड़ी करते हैं।

प्रेमचंद को यह स्पष्ट भान हो रहा था कि यह शोषण अब अधिक दिनों एक चलने वाला नहीं है। रायसाहब को भी इसका आभास हो गया था कि यह शोषण अब अधिक दिनों तक चलने वाला नहीं और जमींदारी प्रथा अब समाप्त

होने वाली है, वे कहते हैं- "लक्षण कह रहे हैं कि बहुत जल्द हमारे वर्ग की हस्ती मिट जाने वाली है।" साथ ही साथ प्रेमचन्द ने यह भी संदेश दिया है कि पूँजी पर अहंकार करना ठीक नहीं, क्योंकि पूँजी क्षणभंगुर होती है।

(4) सेवा का आदर्श - प्रेमचंद ने गोदान में सेवा का आदर्श प्रस्तुत करते हुए जो विचार व्यक्त किए हैं वे लोक कल्याण की दृष्टि से अत्यंत उपयोगी हैं। दौलत से आदमी को जो सम्मान मिलता है वह उसका सम्मान नहीं अपितु उसकी दौलत का सम्मान है। सच तो यह है कि दौलत ज़्यादातर व्यक्तियों में अहंकार उत्पन्न कर देती है और उसके हृदय में सेवा, करुणा जैसी सद्वृतियाँ समाप्त हो जाती हैं। प्रेमचंद ने गोदान के पात्रों के माध्यम से सेवा के महत्त्व को प्रतिपादित किया है। सेवा और परोपकार में मेहता जी का दृढ़ विश्वास है, मालती भी उन्हीं की प्रेरणा से अपने स्वभाव को बदल लेती है अब उसमें आश्चर्यजनक परिवर्तन आ गया है। गरीबों को बिना फीस लिए दवा देती है। वह सेवा का आदर्श प्रस्तुत करती है। प्रेमचंद सेवा को कर्मयोग कहते हैं। नारी को भी अपने व्यक्तिगत जीवन में सेवा धर्म अपनाने का सुझाव देते हुए वे कहते हैं - "सच्चा आनंद, सच्ची शान्ति केवल सेवाव्रत में है। वही अधिकार का स्रोत है, वही शक्ति का उद्गम है।"

(5) सामाजिक क्रान्ति में नारी का योगदान- प्रेमचन्द की मान्यता है कि समाज में परिवर्तन लाने के लिए नारी को अपनी भूमिका का निर्वाह सही ढंग से करना होगा, नारी की सहायता लिए बिना सामाजिक क्रांति असंभव है। मेहता जी ने नारी के संबंध में जो विचार गोदान में व्यक्त किए हैं वे इसी धारणा को पुष्ट करते हैं।

प्रेमचन्द ने गोदान में धनिया के रूप में एक ऐसे नारी पात्र की परिकल्पना की है जो अपनी दृढ़ता, साहस और कर्मठता से समाज को हिला देती है। वह एक साथ सामाजिक रूढ़ियों ,अन्याय और शोषण से जूझती है और अपने लौह व्यक्तित्व पर आंतरिक मृदुता के कारण गोदान की सर्वाधिक जीवंत नारी पात्र बन जाती है।

2. निष्कर्ष: प्रेमचन्द का मत है कि शोषण का विरोध संगठित होकर ही किया जा सकता है अपने सभी उपन्यासों में उन्होंने यह संदेश दिया है कि संगठित होकर संघर्ष करने से ही व्यक्ति और समाज की स्थिति बदलती है। दलित शोषित वर्ग अपने बीच में से ही अपना नेता पैदा करें और संगठित होकर अपने उद्धार का मार्ग प्रशस्त करें। प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक समाज को अपना संघर्ष स्वयं करना होता है। तुच्छ स्वार्थों के वशीभूत होकर कुछ लोग समाज की एकता को भंग करना चाहते हैं इस प्रवृत्ति पर अंकुश लगाना आवश्यक है । निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि 'गोदान' में प्रेमचन्द की दृष्टि अत्यंत व्यापक रही है। कृषक जीवन से जुड़ी हुई समस्याओं का निरूपण करने के साथ- साथ उन्होंने समाज की अन्य समस्याओं पर भी विहंगम दृष्टि डाली है तथा उन सबका निराकरण करने हेतु उचित सुझाव भी दिया है। इस प्रकार निश्चित रूप से गोदान भारतीय ग्रामीण जीवन का आदर्शोन्मुख यथार्थवादी दर्पण कहा जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. मिश्र 'प्रभाकर', चंद्रभानु, प्रेमचन्द की कहानी कला, नन्दन प्रकाशन, विद्यामन्दिर, रानी कटरा, लखनऊ-३, प्रथम संस्करण.
2. नीलमणि, प्रेमचन्द की सर्वश्रेष्ठ कहानियों। एक समीक्षा, रवि प्रकाशन, कृष्ण प्रकाश रोड, गया (बिहार), प्रथम संस्करण – 1962.
3. प्रेमचंद, गोदान , प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली - 110002, संस्करण - सन् 2012.
4. मिश्र, डॉ. सत्यप्रकाश , गोदान का महत्त्व', सुमित प्रकाशन, लोकभारती प्रकाशन, चतुर्थ संस्करण, 2008.